राज
20.00 228
नागराज का कहर

संजय गुप्ता पेश करते हैं
नागराज का कहर
कथा: जॉली सिन्हा। चित्र: अनुपम सिन्हा। इंकिंग: विनोद कुमार, विट्ठल कांबले सुलेख एवं रंगसंयोजन: सुनील पाण्डेय। सम्पादक: मनीष गुप्ता।
वेदाचार्य के पुराने दुश्मन तंत्रता ने नागराज के हाथों एक महापापी शख्स चिंग चेंग को मरवाया और फिर उसके शरीर से तंत्र क्रियाएं करके तिलिस्मराज तालिस्मान को जगाया। तंत्रता वेदाचार्य के पोते और भारती के जुड़वां भाई अग्रज के उस शव को प्राप्त करना चाहता था, जिसे वेदाचार्य ने एक तिलिस्म में रखा था। और जिस शव में तंत्रता ने अपनी सारी तंत्र शक्तियां भर रखी थीं। तालिस्मान अपने एक आदुसी सूचक को भेजकर वेदाचार्य से तिलिस्म का तोड़ तिलिस्म घाती हासिल कर लेता है। वेदाचार्य घायल हो जाते हैं। और नागराज तिलिस्म के द्वार पर तंत्रता और तालिस्मान से जा टकराता है। तंत्रता तिलिस्म में घुस जाता है, और तालिस्मान नागराज को एक तिलिस्म में फंसा देता है। इस पूरे प्रकरण के दौरान नागराज के शरीर से निकला नागू, नागराज के शरीर में चुपके से घुसने की नाकाम कोशिशें करता रहता है। यहां तक की कहानी आप 'अग्रज' में पढ़ चुके हैं। अब आगे पढ़ें-
तालिस्मान का अस्त्र मुझे मारने के लिए बढ़ता चला आ रहा है!...
...मुझे हिलने की कोशिश करनी होगी! बचना होगा इसके घातक वार से!...

...वर्ना तंत्रता को रोकने वाला कोई नहीं होगा!
कमाल है नागराज! मैं किसी इंसान में ऐसी इच्छा-शक्ति पहली बार देख रहा हूं!
तू मेरे 'पंगु-तिलिस्म' की शक्तियों से लड़कर अपने शरीर को ज़रा सा हिला ले रहा है!
ऐसे तू आखिर कब तक बचेगा!
ये सही कह रहा है! मैं ज्यादा देर तक बच नहीं सकता!...
...क्योंकि इस तिलिस्म में मेरी कोई भी शक्ति मेरी पुकार का जवाब नहीं दे रही है!

इसी दौरान-
क्या बात है भारती? तुम इतनी खामोश क्यों हो? क्या सोच रही हो?
आपने मुझे फेसलेस के रूप में नागराज के साथ क्यों नहीं जाने दिया दादाजी?
आपने मुझे खतरे का कारण बताकर रोक लिया! अब यहां भला कौन सा खतरा आ सकता है?
खतरों से तो नागराज जूझ रहा होगा!
मेरे स्वार्थ ने तुमको रोक लिया भारती! तुम चाहे फेसलेस के रूप में वहां जाती, लेकिन तांत्रिक तंत्रता की नजरों से बच नहीं पाती! और जिसने तुम्हारी मां और भाई को जिन्दा नहीं छोड़ा, वह भला तुमको कैसे छोड़ देगा!
नागराज तो एक बार उन दुष्टों को मात दे भी सकता है, लेकिन तुम वहां जाकर अपनी जान गंवा बैठती!
अपने पोते को तो मैं खो ही चुका हूं! अब अपनी पोती को खोना नहीं चाहता!
आप ये नहीं जानते दादाजी कि अगर नागराज को कुछ हो गया तो आप अपनी पोती को भी जिन्दा नहीं पाएंगे!
क्योंकि आपकी पोती की जान नागराज में ही बसती है!

नागराज की कुछ... या कहिए... बहुत कुछ होने की संभावनाएं काफी ज्यादा थीं-
इस तिलिस्म को तोड़ने का एक उपाय तो समझ में आ रहा है।...
...शायद वह काम कर ही जाए!
क्योंकि इस वक्त न तो वह खुद अपना बचाव करने की स्थिति में था, और न ही वहां पर उसका कोई मददगार था-
लेकिन उसके लिए मुझे तालिस्मान के वारों से बचना नहीं होगा!...
...बल्कि जानबूझ कर अपने शरीर पर घाव खाना होगा!
आऽऽऽह!
खच्चाक
अब मैं एक ही झटके से तेरे प्राण निकाल लूंगा!
हा हा हा! देखा नागराज! मैंने कहा था न कि तू ज्यादा देर तक मुझसे बच नहीं पाएगा!
आऽऽऽह!
ये तिलिस्मी ऊर्जा तो सचमुच मेरी जान ले लेगी!

मुझे थोड़ा सा वक्त और चाहिए! तब तक मुझे किसी भी तरह अपने प्राणों को अपने शरीर में ही रोककर रखना होगा!
बस कुछ ही पलों में तेरी यंत्रणा समाप्त हो जाएगी नागराज! तेरी जिन्दगी के साथ-साथ!
अरे! यह... यह क्या? 'तिलिस्मी निर्माण' जमीन में धंस रहा है! कैसे?
मेरी सर्प सेना ने इस 'तिलिस्मी निर्माण' की नींव खोद दी है, तालिस्मान! इसीलिए तेरा निर्माण धरती में समा रहा है!... और इसके साथ-साथ मुझे पंगु बनाने वाला तेरा तिलिस्म भी नष्ट हो रहा है!
लेकिन यह... यह कैसे हुआ? 'पंगु तिलिस्म' में तो तेरी कोई भी शक्ति तेरे शरीर से निकल ही नहीं सकती थी!

इसमें भी तूने ही मेरी मदद की है तालिस्मान! अपने आप तो शायद मैं कुछ भी न कर पाता, लेकिन तूने मुझे घाव लगाकर मेरे रक्त की कुछ बूंदों को बाहर निकाल दिया, और उस रक्त में मौजूद मेरे हजारों सूक्ष्म सर्प मेरे शरीर की कैद से आजाद हो गए!
और उन सर्पों ने तेरे तिलिस्म की नींव को कुछ ही पलों में खोद कर तेरे 'पंगु तिलिस्म' को धरती के अंदर धंसा दिया!
अब मैं तुझसे लड़ने में समय व्यर्थ नहीं करूंगा! क्योंकि मुझे तंत्रता के पीछे जाना है!
तुझे जाने कौन देगा नागराज!
तू जाने के लिए जिस तरफ भी कदम रखेगा...
...वहां से मेरी तिलिस्मी सेना उठ खड़ी होगी!
?
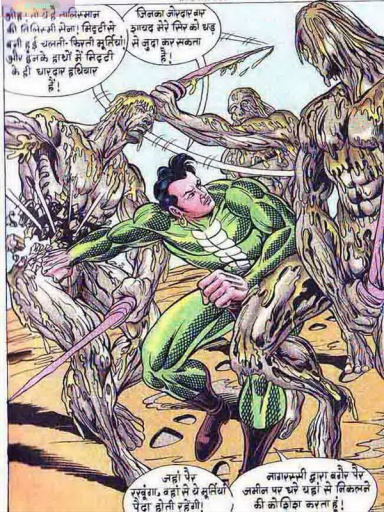
तालिस्मान की तिलिस्मी सेना! मिट्टी से बनी हुई चलती-फिरती मूर्तियां! और इनके हाथों में मिट्टी के ही धारदार हथियार हैं!
जिनका जोरदार वार शायद मेरे सिर को धड़ से जुदा कर सकता है!
जहां पैर रखूंगा, वहां से ये मूर्तियां पैदा होती रहेंगी!
नागरस्सी द्वारा बगैर पैर जमीन पर धरे यहां से निकलने की कोशिश करता हूं!

लेकिन-
ओफ! नागरस्सी को इन्होंने काट डाला! कोई दूसरा रास्ता सोचना होगा!
तेजी से दौड़कर निकलने की कोशिश करता हूं! शायद तब ये मुझे पकड़ न... नहीं! ये कोशिश भी बेकार है!
ये बहुत तेजी से पैदा होते जा रहे हैं!
मूर्तियों के रूप में खतरों की संख्या भी बढ़ती जा रही है! और समय भी बीतता जा रहा है। तंत्रता अब तक तिलिस्म में काफी आगे तक पहुंच गया होगा!
क्या करूं इस मुसीबत से पीछा छुड़ाने के लिए!
कोई रास्ता नहीं है, नागराज! तू मरेगा, और यहीं मरेगा!
भागकर या उड़कर जा नहीं सकता! फिर बिना पैर रखे भला कैसे भागा जा सकता है! आहा! एक रास्ता तो है...

...जमीन पर सांपों का कालीन बिछा देता हूं! फिर न तो जमीन से मेरे पैरों का संपर्क होगा, और न ही मेरे पैरों के निशान से निकलने वाली मूर्तियां पैदा हो पाएंगी!...
...साथ ही साथ मेरे सर्प मेरे पीछे आने वाली मूर्तियों को रोकते भी रहेंगे!
नागराज बहुत चालाक है!...इसको रोकने के लिए वार करने का तरीका बदलना होगा!
नागराज! तेरी सर्प शक्तियों को काटने के लिए अब मैं 'नेवला-निलिस्म' का निर्माण करूंगा!
ओह! एक विशालकाय धारीदार नेवला, अपनी सांस से मेरे 'सर्प कालीन' को अपने अंदर खींचता हुआ मेरी तरफ आ रहा है!

और मेरी फुंकार भी इसको रोक नहीं पा रही है!
फ्फSSSSS
अब ये अपनी सांस के द्वारा मुझे भी अपने अंदर खींच रहा है!
लेकिन नेवले की सांस बीच में ही टूट गई-
नागू!
तुम यहां पर कैसे आ गए? तुम तो फिल्म देखने गए हुए थे!
बाद में पूछना नागराज!
पहले मैं इस विलेन और इसके बॉस का 'दिग्रंड' कर लूं!

तेरी भाषा तो मेरे पल्ले नहीं पड़ रही है, लेकिन इतना तो मैं समझ ही गया हूं कि तू मुझे खत्म करने का इरादा रखता है नागराज के चमचे!
अरे, जब तेरा मालिक तालिस्मान से नहीं बच पा रहा है तो तू क्या बचेगा!
ओह! इन रस्सियों से बचना नागू! ये हमारे शरीर पर गिरते ही हमको तिलिस्मी बंधनों में बांध लेंगी! फिर इनसे बचना बहुत मुश्किल होगा!
यह मुझे तुम्हारे बताने से पहले ही पता चल गया है नागराज!
ले, मेरे 'मृत्युपाश तिलिस्म' से बचकर दिखा!
कड़ड़क
कड़ड़क
लेकिन मेरी शक्ति इस बंधन से निकलने का... अरे! तालिस्मान के तिलिस्मी यंत्रों को कोई नष्ट कर रहा है!...
रस्सियां भी गायब हो रही हैं!
कौन काट रहा है तालिस्मान का तिलिस्म!

जवाब में एक गंभीर आवाज गूंज उठी-
मैंने काटा है तालिस्मान का तिलिस्म! लेकिन मुझे न तो तुम दोनों की जान बचाने में दिलचस्पी है, और न ही तालिस्मान से टकराने में! मुझे तो उस दुष्ट तांत्रिक का पता चाहिए!
बता, कहां है तंत्रता! मुझे मिली सूचना के अनुसार उसे यहां पर तेरे साथ ही देखा गया था!
तंत्रता तो तिलिस्म में घुस चुका है! अब तुम उसके पीछे जा सकते हो तो जाओ!
अवश्य जाऊंगा! तिलिस्म तोड़कर जाऊंगा! तंत्रता तक पहुंचने से कोई तिलिस्म मुझे रोक नहीं सकता!
लेकिन पहले तुझे मारूंगा! ताकि तू आगे रुकावटें न खड़ी कर सके!
तेरा तिलिस्म शक्तिशाली है! तू तिलिस्म का महान ज्ञाता लगता है!
लेकिन मैं तालिस्मान हूं! तिलिस्मराज! तेरा तिलिस्म मुझे बांध नहीं पाएगा!
ये जो भी हो नागराज! लेकिन इसने हमको मौका दे दिया है! तुम्हारी और दादा वेदाचार्य की थोड़ी बहुत बातें मैंने भी सुनी थीं! तुमको तिलिस्म में जाना है! इन दोनों को लड़ने दो, और तुम यहां से चले जाओ!
मैं भी यहां रुककर इस तिलिस्म ज्ञानी पंडित की मदद करता हूं!
तालिस्मान के तिलिस्म को काटने वाला मामूली व्यक्ति नहीं हो सकता! इसका तिलिस्म ज्ञान और तंत्रता से दुश्मनी एक ही बात की तरफ इशारा कर रहे हैं!

तिलिस्मज्ञानी, देवाचार्य का पुत्र और भारती एवं ...राज का पिता! मेरा ख्याल सही भी हो सकता है, और गलत भी!
पर अब जब तंत्रता तिलिस्म में काफी आगे तक निकल चुका होगा! मुझे तिलिस्म के दूसरे रास्ते को शीघ्रता से तोड़ना होगा!
और इस काम में ये तिलिस्म ज्ञाता मेरी मदद कर सकता है!
क्या सोचने लगे, नागराज?
ये तिलिस्मज्ञाता, तिलिस्म तोड़ने में मेरी मदद कर सकता है नागू!
तुम अपनी मणि शक्ति से तालिस्मान को रोको, और मैं उसको अपने साथ ले जाता हूं!
ठीक है नागराज! ऐसा ही सही!
हट जा, नागमालव! मुझे तालिस्मान को मारने के लिए तेरी सहायता नहीं चाहिए!
ये आपकी सहायता इसलिए कर रहा हूं, ताकि आप तंत्रता तक पहुंच सकें!
मैं भी तंत्रता के पीछे तिलिस्म में ही जा रहा था। अगर हम और आप साथ रहेंगे तो आपका काम भी आसान हो जाएगा, और मेरा भी!

तुम्हारा कौन सा काम है?
और तुम हो कौन?
मैं नागराज हूं! दमनकारियों का दुश्मन और असहायों का मित्र! आपका काम तंत्रता तक पहुंचना है, और यही मेरा भी काम है!
अगर आप तालिस्मान से ही उलझे रहे तो तंत्रता अपना काम पूरा करके न जाने कहां गायब हो जाएगा!
लगता है कि ऐसी बहुत सी बातें हैं, जिनके बारे में मैं नहीं जानता! पर तुम जानते हो! ठीक है! मैं तुम्हारा साथ दूंगा! एक शर्त पर!
कैसी शर्त?
तुम यह नहीं पूछोगे कि मैं कौन हूं, और तंत्रता से क्या चाहता हूं!
मुझे मंजूर है!
मेरे साथ आइए!
लेकिन मुझे मंजूर नहीं है! तंत्रता का काम पूरा होने तक तिलिस्म में कोई भी नहीं जाएगा!
वो तो कहीं और जा रहे हैं! तिलिस्म तो यहीं पर रह गया है!
भई तालिस्मान, तू लड़ाई में ध्यान दे! अच्छा लड़ाई छोड़ो! खेलकर टाइम पास करते हैं!
लुका-छिपी खेलते हैं! मैं छुपूंगा, और तू ढूंढना!
तालिस्मान से कोई छुप नहीं सकता! वैसे भी यहां पर छिपने की कोई जगह नहीं है!

यह कैसा तिलिस्म है? शोर से कान के पर्दे फटे जा रहे हैं!
पौंSSSS
ये मेरी 'मणि-शक्ति' द्वारा रचा गया दृश्य है, तालिस्मान! यहां पर चुपने की ढेरों जगहें हैं!
NAGOO
टींSSSS
पौंईSSSS
NAGOO 1

अब नागू को ढूंढ सकता है तो ढूंढ ले तालिस्मान! और मेरी 'मणि शक्ति' को खत्म करके नागराज के पीछे तिलिस्म में चला जा!
ढूंढूंगा! तुझे मैं जरूर ढूंढूंगा! लेकिन मणि को तेरे सर से अलग करने के लिए नहीं!
आऽऽऽह!
धड़ाक्क
बल्कि तेरे सर को तेरे धड़ से अलग करने के लिए!
चीं ईं ईं
तेरी पूरी मणि-सृष्टि को मैं धूल में मिला दूंगा! फिर देखता हूं कि तू कहां पर छिपेगा!
नागू, तालिस्मान को उलझाए हुए था-

उस तिलिस्म ज्ञाता के द्वारा बनाए गए तिलिस्म के दूसरे द्वार तक पहुंच चुका था-
मैं तो समझ रहा था कि हम तालिस्मान से दूर भाग रहे हैं! लेकिन हम तो कहीं और ही आ गए! तिलिस्म तो पीछे छूट गया है!
नहीं! हम तिलिस्म में ही आ रहे हैं! इस स्थान पर तिलिस्म का वह द्वार है, जहां से एक छोटा रास्ता तिलिस्म के अंत तक जाता है!
द्वार? मुझे तो यहां पर नागफनी के मोटे पेड़ों के अलावा और कुछ भी नजर नहीं आ रहा है!
स्थान तो यही है, और मुझसे बड़े तिलिस्म ज्ञानी आप हैं!
यह तो आप ही पता लगा सकते हैं कि द्वार यहां कहां पर होगा!
लेकिन-
अरे! मेरा तिलिस्म विफल रहा! या फिर यहां कोई द्वार है ही नहीं!
मैं यहां की जमीन के चप्पे-चप्पे पर 'विपरीत तिलिस्म' बिछा देता हूं! फिर द्वार दिखने लगेगा!

द्वार है! ऊपर देखिए! नागफनी की शाखाओं ने द्वार का रूप ले रखा है!
वह तो आर-पार है नागराज! इसमें घुसकर भला हम कहां जाएंगे! वैसे भी नागफनी घनी है! वहां तक पहुंचने के लिए न तुम नाग-रस्सी का प्रयोग कर पाओगे, और न ही मैं गरुड़दंड का!
तो फिर हमको चढ़कर जाना होगा! आह्ह...
तुम मुझे तिलिस्मा-चार्य कह सकते हो नागराज!
कांटें शरीर को छेदते जा रहे थे! लेकिन दोनों का ही इरादा दृढ़ था-
कुछ ही देर की मेहनत के बाद दोनों उस द्वार के सामने खड़े थे-
देखा नागराज! इस द्वार के पार कुछ भी नहीं है! यह तिलिस्म का प्रवेश द्वार नहीं हो सकता!
इस द्वार को पार करके देखते हैं, तिलिस्मा-चार्य!
नागराज का पैर पड़ते ही-

पेड़ का ऊपरी
चला गया-
नागराज!
आ जाइए, तिलिस्माचार्य! यही तिलिस्म का द्वार है!
ओह, समझा! द्वार जमीन पर था ही नहीं, इसीलिए मेरा तिलिस्म इस द्वार का पता नहीं लगा पाया!
यात्रा को समाप्त होने में-
ज्यादा वक्त नहीं लगा-
अद्भुत!
महान तिलिस्म रचा है वेदाचार्य ने! देख रहा हूं, फिर भी यकीन नहीं होता!

हम ब्रह्माण्ड के एक प्रारूप में तैर रहे हैं! और सामने सूर्य की परिक्रमा कर रही दर्जनों पृथ्वियां हैं!
इनमें से सिर्फ एक पृथ्वी हमारी पृथ्वी का प्रारूप है। और वही तिलिस्म में आगे जाने का द्वार है!
बाकी पृथ्वियां मौत का द्वार हैं!
तुमने अभी वेदाचार्य का नाम लिया! अगर यह तिलिस्म वेदाचार्य ने बनाया है तो इसका 'विपरीत तिलिस्म' बना पाना बहुत कठिन है। लेकिन फिर भी मैं प्रयास करूंगा!

आप जानते हैं वेदाचार्य को?
शश श! चुप रहो! मैंने कहा था कि मेरे बारे में जानने की कोशिश मत करना!
मुझे ध्यान लगाने दो! विपरीत तिलिस्म फैलाने दो!
मैं अपनी विपरीत तिलिस्म वाली पृथ्वियों को फैलाऊंगा! जो नकली पृथ्वियों से टकराकर उनको नष्ट कर देंगी! बचेगी तो सिर्फ असली पृथ्वी!
तिलिस्म के दूसरे चरण में जाने का द्वार!
लेकिन दोनों तिलिस्मों का स्पर्श होते ही-
ओह! पृथ्वी नष्ट तो हो रही हैं, लेकिन उनके अंदर भरा लावा चारों तरफ फैल रहा है!
मुझे अपना तिलिस्म रोकना होगा! वरना हम भस्म हो जाएंगे!

इसी दौरान-
तालिस्मान के सामने आ कायर! वरना तेरी 'मणिरचना' में ही मैं तेरी कब्र बना दूंगा!
सामने आ गया तो फिर खेल का मजा खत्म हो जाएगा! ढूंढो तो जानूं!
तू मेरा समय नष्ट कर रहा है! अब मैं वह तिलिस्म फैलाऊंगा, जो एक ही झटके में तेरी सृष्टि को खत्म कर देगा!
ऊपर से बड़ी-बड़ी शिलाएं गिरकर हर चीज को चकनाचूर करने लगीं-
और कुछ पलों बाद दूर-दूर तक मलबे के ढेर के अलावा और कुछ भी नजर नहीं आ रहा था-
तेरी 'सृष्टि' नष्ट हो गई, लेकिन फिर भी तू नजर नहीं आ रहा है। मलबे के ढेर में छुपा बैठा है! यानी मलबे को भी रास्ते से हटाना पड़ेगा!

मैं इस सारी जमीन को दलदली बना देता हूं! फिर मलवे के साथ-साथ या तो तू भी जमीन में समा जाएगा, या मेरे सामने आएगा!
मलवे का ढेर तेजी से दलदली भूमि में समाने लगा-
और सामने नजर आ गया-
नागू! हा हा हा! आखिर तुझे मेरे सामने आना ही पड़ा दुष्ट नाग!
ब... बचा लो मुझे!
तुझे बचाने का क्या फायदा? मणि को बचा लूं तो फिर भी कुछ फायदा है! तेरी शक्तियां फिर मुझे मिल जाएंगी!
अब आराम से डूब जा!
नहीं! गुलुप!
हा हा हा! मर गया दुष्ट नाग! लेकिन अपनी शक्तियां मुझे दे गया! देखूं कि इससे मैं क्या-क्या बन सकता हूं!
आई स्पाई!

तुम हार गए! तुम हार गए! अब तुम बीस तक गिनो! मैं फिर से छुपूंगा!
बुरा मत मानना तालिस्मान भाई! तुम जरा मूर्ख हो! जब मैं मणि से पूरा शहर बना सकता हूं तो क्या एक नागू नहीं बना सकता?
अच्छा, अब मैं एक नई लोकेशन बनाता हूं! हुम... गोदाम की! मैं छुपूंगा, तुम फिर मुझे ढूंढ़ना!
कितना मजा आएगा न?
तू?...तू...तू यहां है, तो वो कौन था जिसे मैंने दलदल में डुबो दिया है?
नहीं! अब तेरी कोई चाल नहीं चलेगी! मैं तुझे 'दर्पण तिलिस्म' में कैद कर दूंगा! जिसमें से न तो तू बाहर निकल पाएगा, और न ही तेरी मणि शक्ति!
तेरी मणि की किरणें, दर्पणों से टकरा-टकराकर, अंदर ही घूमती रह जाएंगी!

अब मैं आराम से इस तिलिस्म का द्वार तोड़कर तंत्रता तक पहुंच सकता हूं। और अगर नागराज भी किसी प्रकार वहां तक आ पहुंचा तो तंत्रता की सहायता भी कर सकता हूं!

इस द्वार को तोड़ने में मुझे ज्यादा वक्त नहीं लगेगा!

नागराज अभी तिलिस्म के छोटे रास्ते के पहले चरण में ही फंसा हुआ था-

यह क्या हो रहा है? हमको कोई शक्ति खींच रही है?

यह सूर्य की गुरुत्व शक्ति है, तिलिस्माचार्य! वेदाचार्य की एक और सुरक्षा प्रणाली! हम सूर्य की कक्षा में घुस रहे हैं!

अब हमारे पास वक्त बहुत कम है! अगर जल्दी ही हमने असली पृथ्वी को न पहचाना तो सूर्य हमको अपने अंदर खींचकर भस्म कर देगा!

अगर हम किसी गलत पृथ्वी को छू लें तो क्या होगा? एक तिलिस्मी प्राणी भेजकर देखता हूं!

लेकिन गलत पृथ्वी का स्पर्श होते ही-

ओह! ये पृथ्वी भी फट पड़ी! हमारी जानें भी जा सकती थीं!

अब क्या करें नागराज? जल्दी सोचो! वरना सूर्य हमको भस्म कर देगा!

आऽऽऽऽह! बचाओ नागराज! मैं सूर्य की तरफ खिंच रहा हूं!
घबराइए मत!
ये नागरस्सी आपको तब तक सुरक्षित रखेगी, जब तक सूर्य मुझे भी खींचना शुरू नहीं कर देता!
अब मुझे ही सही पृथ्वी का पता लगाना होगा! उस पृथ्वी में वह सारी खूबियां होनी चाहिए, जो हमारी पृथ्वी में हैं!
जैसे कि हमारी पृथ्वी 23½ डिग्री के अक्षांश पर सूर्य की तरफ झुकी हुई है!
वह झुकाव, जिसके कारण पृथ्वी पर मौसम बदलते रहते हैं!
मैं सारी पृथ्वियों को देख रहा हूं! ऐसी तो तीन पृथ्वियां हैं!...
... यानी इन तीनों में से ही एक सही पृथ्वी है!
लेकिन हम उसको पहचानेंगे कैसे? पृथ्वी पर भला ऐसी कौन सी चीज है जिसको अंतरिक्ष से भी देखा जा सके!
ओह! अब मैं भी सूर्य में खिंच रहा हूं!
सही पृथ्वी का चुनाव कुछ ही पलों में करना होगा!

ओह! याद आ गया! अब मैं सही पृथ्वी को पहचान सकता हूं! ये वाली है सही पृथ्वी!
लेकिन हमको तो सूर्य खींच रहा है! उस पृथ्वी तक हम पहुंचेंगे कैसे?
चांद में नागरस्सी को फंसाकर तिलिस्माचार्य!
हमारे पास आते ही इस पृथ्वी से बादल उठ रहे हैं!
तुमको पक्का यकीन है कि यही सही पृथ्वी है नागराज?
हां तिलिस्माचार्य!
लेकिन तुमने सही पृथ्वी को पहचाना कैसे?
पृथ्वी हमको उतनी ही बड़ी दिखाई दे रही थी, जितनी चांद से असली पृथ्वी नजर आती है! और चांद से पृथ्वी की एक चीज को देखा जा सकता है! चीन की दीवार को!
यह दीवार सिर्फ इसी पृथ्वी में नजर आ रही थी! यानी यही पृथ्वी असली पृथ्वी का प्रतिरूप है! और तिलिस्म के दूसरे चरण का द्वार है!
बादल घने होते जा रहे हैं, नागराज! मुझे तो अपने हाथ तक नजर नहीं आ रहे हैं! पता नहीं इन बादलों के पार क्या होगा?
नागराज और तिलिस्माचार्य तिलिस्म का पहला चरण पार कर चुके थे-

और उधर- तालिस्मान भी तिलिस्म में प्रवेश करने का रास्ता बना रहा था-
बस! कुछ ही देर में ये द्वार खुल जाएगा!
अगर तालिस्मान तंत्रता के पास पहुंच गया तो नागराज की जान खतरे में पड़ जाएगी!
मुझे इसको रोकना होगा! लेकिन इसको रोकूं तो कैसे? मणि की किरणें, दर्पणों से टकराकर परावर्तित हो रही हैं!
और... और अब दर्पण के इस पिंजरे में पानी भर रहा है! तो यह है तालिस्मान का असली तिलिस्म!
मणि मुझे आग से तो बचा सकती है, पर पानी में डूबकर मरने से नहीं!
ये दर्पण भी मुझसे टूट नहीं पा रहे हैं! अब क्या करूं? अब तो तू 'हीरो हीरालाल' वाली मौत मरेगा, नागू!
ये पिंजरा तोड़ने का उपाय सोच! जल्दी!
ओऽऽऽऽ हां! मैं बच सकता हूं! मुझे बस अपनी मणि से 'अग्नि किरणें' छोड़नी होंगी!
जो इस पानी को गर्म करेंगी...

...भाप बनेगी!
फिर भाप का प्रेशर बढ़ेगा! वह पिंजरा बगैर सीटी वाला प्रेशर कुकर बन जाएगा!
खुल गया द्वार!
भाप के प्रेशर से उड़ गया तिलिस्मी कुकर का ढक्कन!
और बाहर आ गया ताज़ा-ताज़ा उबला हुआ, नागू!
तू मुझे जरूरत से ज्यादा परेशान कर रहा है नागू!
इस बार मैं तुझको अपनी आंखों के सामने मारूंगा...
अरे, भई! मैं तो तुझको अपनी लुका-छिपी वाली चांस लेने के लिए रोक रहा था!
लड़ने के लिए नहीं!
तालिस्मान को नागू ने उलझाया हुआ था-

और नागराज तिलिस्माचार्य के साथ तिलिस्म के दूसरे चरण में प्रवेश कर चुका था-
तो ये है तिलिस्म का दूसरा भाग!
आगे जाने का रास्ता साफ तो नजर आ रहा है। लेकिन ये मूसलाधार बारिश और कड़कती बिजलियां हमारा काम मुश्किल कर सकती हैं!

बारिश और बिजली कोई समस्या नहीं खड़ी कर पाएंगी नागराज! क्योंकि मैं 'तूफानी तिलिस्म' से इन बादलों को छितरा दूंगा!
तेज हवा तिलिस्मी बादलों को टुकड़ों-टुकड़ों में बांटने लगी-
और समस्या ज्यादा कठिन हो गई-
वायु को रोकिए तिलिस्माचार्य। बादलों के टुकड़े अब हर दिशा में फैलकर बिजलियां गिरा रहे हैं! पहले कम से कम यह स्थान तो सुरक्षित था!
मैं गरुड़ दंड द्वारा उड़कर उस तरफ जाने की कोशिश करता हूं!
ऐसी कोशिश में कोई बिजली आप पर भी गिर सकती है! खंभों पर चलकर जाना ही सबसे सुरक्षित रास्ता लगता है!
ठीक है नागराज! आगे बढ़ो! पर जरा संभलकर! पानी के कारण खंभों पर की चिकनाहट बढ़ गई है!
तभी बिजली की कड़कड़ाहट जैसी वह आवाज गूंज उठी-
रुक जाओ! मैं इस तिलिस्म की रक्षक हूं!

मैं किड़ीट हूं! बादलों की पुत्री! इस रास्ते पर एक कदम भी आगे रखा तो तड़ित से भस्म कर दूंगी!
वापस लौट जाओ!
नागराज ने पीछे पैर रखना सीखा ही नहीं है!
वैसे भी हम तो ऊपर से गिरे हैं! पीछे कैसे जाएं!
तो फिर ऊपर चले जाओ!
पलक झपकने से पहले ही-
खंभे के स्थान पर सिर्फ उसका ढांचा बचा था-
और नागराज के शरीर का ढांचा तक नहीं बचा था-
नागराज!
क्या सचमुच मर गया नागराज?

नहीं, तिलिस्माचार्य! नागराज को मारना अगर इतना आसान होता तो नागराज कभी का मर चुका होता!
तुम...तुम मेरे पीछे कैसे आ गए? और तुम बचे कैसे?
ऐन वक्त पर अपने शरीर को इच्छाधारी कणों में बदल कर! बाल-बाल बचा!
लेकिन इस प्रकार हम आगे कैसे जाएंगे?
खतरा तो मोल लेना ही होगा!
मुकाबला बिजली से है!
तो बिजली से भी तेज गति से चलना पड़ेगा!
तू 'सर्प रस्सी' पर झूलकर किडीट से बचना चाहता है? लेकिन तेरी ये कोशिश सफल नहीं होगी!

क्योंकि तू चाहे कितना भी फुर्तीला हो, लेकिन बिजली की गति को मात नहीं दे सकता!
तू फुर्तीला है! मेरे वारों को पहले से ही भांपकर बच जा रहा है। लेकिन तू सर्प रस्सी द्वारा खंभों से जुड़ा हुआ है!...
...और सर्प रस्सी मेरे वारों से बच नहीं सकती!
आऽऽऽऽऽ ह!
ओफ्! मैं ऐन वक्त पर अपने आपको संभालकर इस खंभे से चिपक गया! वरना नीचे मौत मेरा इंतजार कर रही थी!
अब देखती हूं कि तू किस प्रकार बचेगा नागराज!

अब तो इन 'विद्युत तरंगों' से बचना असंभव हो गया है! लेकिन कोई न कोई रास्ता तो होगा जरूर! तिलिस्म तोड़ने का उपाय हर तिलिस्म में जरूर होता है!
एक नागरस्सी टूटे खंभे की सरियों से जा लिपटी-
?
लेकिन बादलों की बिजली को रोकने का यहां पर भला क्या उपाय हो सकता है? हैं! ... है तो!
और दूसरी नागरस्सी, किड़ीट की तरफ लपक पड़ी-
अब तुझे मरने की जल्दी हो रही है! शायद इसीलिए तू मुझ पर नागरस्सी छोड़ रहा है!

मुझे मरने की नहीं, तिलिस्म पार करने की जल्दी है किड़ीट! और उसके लिए...

... तुमको मेरे रास्ते से हटना पड़ेगा!

दोनों जुड़ी हुई नागरस्सियों का किड़ीट के शरीर से स्पर्श होते ही-

एक पल में ही
किड़ीट का नामोनिशान खत्म हो गया-

ऐसा ही कुछ इन सलाखों ने भी किया है। इस तिलिस्म में यही किड़ीट की शक्ति की काट थी!

अब हम आराम से आगे बढ़ सकते हैं!

अब आगे बढ़ने का रास्ता साफ है! सिर्फ फिसलन और बिजलियों का ध्यान रखना होगा! आइए!
थोड़ी ही देर की मेहनत के बाद लों वह खतरनाक रास्ता पार कर चुके थे-
रुकिए, तिलिस्माचार्य! यहां कदम-कदम पर खतरा है। घुसने से पहले इस द्वार की जांच करलेना उचित होगा।
घुसने की चेष्टा करते ही द्वार ने बंद होकर मेरे सांप को गाजर की तरह काट डाला!
आहा! आखिरकार म यह तिलिस्म भी पार कर गए! गले चरण का द्वार सामने है!
और अब द्वार के अंदर से रस्सी निकलकर हमको जकड़ रही है!

...अब ये रस्सी हमको द्वार की तरफ खींच रही है! इच्छाधारी कणों में बदलकर इससे आजाद हो जाओ, नागराज!
मैं कोशिश तो कर रहा हूं!
लेकिन ये शिकंजा मेरे इच्छाधारी कणों को भी नहीं छोड़ रहा है!
यानी हम भी तुम्हारे सांप की तरह कट जाएंगे!
नहीं तिलिस्माचार्य! मैं ऐसा नहीं होने दूंगा! ये द्वार किसी के भी घुसने पर बंद हो जाता है!
और मेरे पैर डालने पर भी यह बंद तो जरूर होगा...
...लेकिन बंद होने से पहले ही मैं अपना पैर खींच लूंगा...
कटट
...और यह रस्सी कट जाएगी! हम आजाद हो गए!
लेकिन हम आजाद होकर करेंगे क्या? पीछे के सारे स्तंभ तो गायब हो चुके हैं! हम न आगे जा सकते हैं, और न ही पीछे!

आप तो तिलिस्माचार्य हैं। फिर भी मैं आपको याद दिला रहा हूं कि तिलिस्म की काट तिलिस्म के अंदर ही छुपी होती है! अगर हम आगे, पीछे और ऊपर नहीं जा सकते तो हमको नीचे जाना होगा! हमको तिलिस्म ने ये रस्सी इसीलिए दी है, ताकि हम नीचे जा सकें!
लेकिन नीचे जाने के लिए न तो मुझे रस्सी की जरूरत है, और न ही आपको!
थोड़ी ही देर बाद-
नागराज और तिलिस्माचार्य तिलिस्म के तीसरे चरण में पहुंच चुके थे-
अद्भुत!
महान तिलिस्म-निर्माता हैं, वेदाचार्य!

ऐसे जटिल तिलिस्म का निर्माण करना तो तालिस्मान के भी वश से बाहर की बात है!
तारीफ बाद में करियेगा तिलिस्माचार्य! पहले इस तिलिस्म का निरीक्षण तो कर लीजिए! हम बर्फ से ढकी एक पर्वत की चोटी पर खड़े हैं! और यह पर्वत एक ज्वालामुखी है। सामने बर्फ से ढकी एक और पर्वत-चोटी है! और हमारे बीच में है, बर्फ से ढकी घाटी! अब हमको जाना कहां है?
सामने वाली चोटी ही हमारी मंजिल है। हमको वहां तक पहुंचना है! लेकिन आश्चर्य की बात तो यह है कि बीच में ऐसा कोई खतरा नजर नहीं आ रहा है, जो हमको वहां पहुंचने से रोक सके!

खतरा आपके ठीक नीचे है, तिलिस्माचार्य! लावे का स्तर बढ़ रहा है! अगर हम आगे नहीं बढ़े तो लावा हमको खाक कर देगा!
इस तिलिस्म की काट बताना मेरे बस की बात नहीं है!
उड़कर उस चोटी तक पहुंचने की कोशिश करता हूं!
मैं भी नागरस्सी द्वारा उस पार जाने की कोशिश करता हूं! यहां रुकना मौत को दावत देना है!
दोनों ज्यादा दूर नहीं जा पाए-
बर्फ के गिरने की गति एकाएक तेज हो गई है। मैं बर्फ में ढक रहा हूं, और इसका वजन मुझे उड़ने से रोक रहा है!
आप भी सर्प रस्सी पर आ जाइए। लेकिन मेरी सर्प-रस्सी भी इस भीषण ठंड को ज्यादा देर तक सह नहीं पाएगी! हमको जल्दी से जल्दी उस पार पहुंचना होगा!

वैसे भी मुझे डर है कि इस तिलिस्म में किड़ीट जैसे खतरे भी मौजूद होंगे!
और वे हम पर कब टूट पड़ेंगे, इसका कोई भरोसा...
...आऽऽऽह!
ओह! घाटी की बर्फ उठकर तिलिस्मी प्राणियों का आकार ले रही है!
और ये हिम प्राणी हमला कर रहे हैं!
शीत से मेरी शक्ति क्षीण हो रही है!...
...लेकिन फिर भी मैं इनको अपना रास्ता रोकने नहीं दूंगा!
लेकिन ये तो संख्या में बढ़ते ही जा रहे हैं नागराज जगह-जगह से पैदा हो रहे हैं!
खतरा बढ़ रहा है तिलिस्माचार्य! ये प्राणी हमको आगे बढ़ने नहीं दे रहे। और नागरस्सी कभी भी टूट सकती है!

लेकिन और कोई रास्ता भी तो नहीं है! हमें इनको नष्ट करते हुए ही आगे बढ़ना होगा!
ओफ! सर्परस्सी टूट गई!
लेकिन-
बच गए!
मर गए! यह चट्टान तो बहुत गर्म है! कम्बख्त ने कहां लाकर पटक दिया?
बर्फ मुझे उड़ने भी नहीं दे रही है! वरना मैं तुमको बचा लेता!
अब तो घाटी में गिरकर हमारी मृत्यु निश्चित है!
हम जहां से चले थे वहीं पर वापस आ गए हैं! ज्वालामुखी के दहाने पर!

अब खतरा और बढ़ गया है। ज्वालामुखी का दहाना लावे से भर गया है। और अब लावा नीचे गिरना शुरू हो गया है!
और सामने ये हिंसप्राणी हमारा रास्ता रोककर खड़े हैं! इधर भी मौत है, और ऊपर भी! अब हम सामने वाले शिखर तक कैसे पहुंचेंगे?
इन हिंसप्राणियों को खत्म करना होगा! लेकिन कैसे?
आऊऽऽऽ! ये चट्टान तो सचमुच काफी गर्म है! पर कैसे? आस-पास की चट्टानें तो इतनी गर्म नहीं हैं!
सोचना बंद करो नागराज, और कुछ करो! लावा अब हमारी तरफ बहना शुरू हो गया है!
लेकिन उससे होगा क्या?
समझ गया! आप उस चट्टान को खिसकाइए तिलिस्माचार्य! और मैं इस चट्टान को हटाता हूं!
ये चट्टानें लावे के संपर्क में हैं! इसीलिए इतनी गर्म हैं! इनको हटाते ही लावा इन छेदों से पानी की तरह बहना शुरू हो जाएगा!

यहां से बहकर ये लावा घाटी में पहुंचेगा और सारी बर्फ को पिघला-कर भाप और पानी में बदल देगा! साथ ही साथ ये हिम प्राणी भी खत्म हो जाएंगे!
एक चमत्कार और भी हो रहा है नागराज! पिघला हुआ पानी घाटी में भर रहा है! पहाड़ों पर की बर्फ भी पिघल कर पानी का स्तर बढ़ा रही है!
कुछ ही देर बाद-
पूरी घाटी पानी से भर गई है तिलिस्माचार्य! और लावे का बहना भी रुक गया है!
अब हम पानी में तैरकर आराम से उस चोटी तक पहुंच सकते हैं!
इस तिलिस्म को सिर्फ तुम जैसा जुझारू इंसान ही तोड़ सकता था नागराज!
मैंने तो हार मान ली थी!

कुछ ही देर बाद-
नागराज और तिलिस्माचार्य उस पर्वत की चोटी पर खड़े थे-
नीचे अंधकार है! कुछ भी नजर नहीं आ रहा है!
रास्ता तो यही है नागराज! हमको नीचे जाना ही पड़ेगा!
ठीक है! लेकिन जरा संभलकर, तिलिस्मा-चार्य!
कहीं ये रास्ता भी अग्नि द्वार की तरह मौत का द्वार न हो!
नीचे से कुछ आवाज आ रही है नागराज!
जैसे कहीं पर कोई तीव्र तूफान घूम रहा हो!
ये तूफान ही है, तिलिस्माचार्य! एक जल-चक्रवात!
और इसकी तीव्र शक्ति हमको नीचे की तरफ खींच रही है!
ओफ! पता नहीं ये हमको मौत की तरफ ले जाएगा, या तिलिस्म के अगले चरण की तरफ!
आऽऽऽह! चक्रवात ने हमको पानी के अंदर ला पटका है। क्या यही तिलिस्म का चौथा चरण है?
ऐसे न जाने कितने चरण और होंगे!
वेदाचार्य छोटा तिलिस्म नहीं बना सकता था क्या?

इस तिलिस्म में फिलहाल तो कोई खतरा नजर नहीं आ रहा है, सिवाय एक खतरे के!
और वह ये कि पानी में सांस नहीं ली जा सकती! और बगैर सांस के इंसान जिन्दा नहीं रह सकता!
ये हवा के बड़े-बड़े बुलबुले! शायद यही इस समस्या का हल है!
आऽऽह! दम घुट रहा है!
मुझे सांस चाहिए! हवा चाहिए!
और हवा इन बुलबुलों में मौजूद है!
लेकिन बुलबुले में मुंह डालते ही-
ओह! तिलिस्माचार्य अचेत हो गए हैं!
यानी बुलबुलों की हवा जहरीली और घातक है!
लेकिन ऐसा संभव नहीं है! तिलिस्म का हल, तिलिस्म में ही छुपा होता है! इनमें से कुछ बुलबुलों में स्वच्छ वायु जरूर होगी! लेकिन उन बुलबुलों का पता कैसे लगेगा?
देखने में तो सारे बुलबुले एक जैसे ही हैं!
अगर जल्दी ही शुद्ध वायु का पता न चला तो तिलिस्माचार्य दम तोड़ देंगे!

एक तरीका है! मेरे सर्प!
मेरे सर्प जिन बुलबुलों में जाकर जीवित रह सकें उनमें स्वच्छ वायु होगी!
इन दोनों बुलबुलों में शुद्ध वायु है! एक से तिलिस्माचार्य सांस ले सकते हैं, और दूसरे से मैं!
हवा का माध्यम पाकर पानी में बोलना भी संभव हो गया था-
आऽऽऽह! शुक्रिया नागराज! अगर तुम सही बुलबुलों को न ढूंढ पाते तो हम दोनों का ही जीवित बचना मुश्किल था!
ये बुलबुले हमको आगे का रास्ता भी दिखाएंगे! जहां से ये हवा आ रही है, वहां से बाहर निकलने का मार्ग जरूर होगा!
बुलबुलों का पीछा करते-करते-
यहां से बुलबुले आ रहे हैं! पर यहां तो दो द्वार हैं!
एक में आग दहक रही है!
और दूसरे से बुलबुले आ रहे हैं!

यह बताने के लिए तिलिस्म ज्ञाता होने की जरूरत नहीं है नागराज कि हमको बुलबुले वाले द्वार में जाना है! क्योंकि उस तरफ जरूर जीवनदायी हवा होगी!
द्वार पार करने के लिए...
...तुम दोनों को 'सीवार' को पार करना पड़ेगा!
सफल हो सकोगे तो आगे चले आना!
ओह! अभी ये मुसीबत भी बची है!
लेकिन इससे निपटना मुश्किल नहीं होगा!

मेरा तिलिस्मी चक्र इसके टुकड़े-टुकड़े कर देगा!
कोई फायदा नहीं हुआ तिलिस्माचार्य! इसका शरीर बेलों से बना है, और उन समुद्री बेलों ने तेजी से बढ़कर इसके शरीर को फिर से संपूर्ण कर दिया है!
और अब ये हवा के बुलबुलों को हमसे दूर कर रहा है। ताकि रक्षक बुलबुले की हवा खत्म होने के बाद हम दूसरे बुलबुलों से सांस ले ही न सकें!
इसने मेरा दंड भी छीन लिया है। मैं तिलिस्मी वार नहीं कर सकता! और इसकी जकड़ मेरे शरीर में रही-सही हवा को भी बाहर निकाल रही है!
मेरी कलाइयां भी बंद हैं! सर्प सेना बाहर नहीं आ सकती!

फुंकार का प्रयोग किया तो फेफड़ों में बची हवा भी साथ-साथ बाहर निकल जाएगी! क्या करूं इस शिकंजे से आजाद होने के लिए?
यह आग! पानी में सुलगती आग कारक ही अर्थ हो सकता है। यह इसको नष्ट करने के लिए है। सीवार को आग से जलाया जा सकता है!
नागराज ने पूरी शक्ति लगाई, और-
आऽऽऽह! मैं आग तक तो पहुंच गया! लेकिन जो आग मुझे उबाल दे रही है...
... उसका सीवार के पत्ते रूपी हाथों पर जरा सा भी असर नहीं हो रहा है!
यानी सीवार को इस आग से जलाया नहीं जा सकता! फिर और कौन सा तरीका बचता है?
किसी जल प्राणी की कमजोरी भला क्या हो सकती है?... ओह! इसका जवाब तो आसान है!
नागराज के तीव्र वार, सीवार के विशाल शरीर को हिलाने लगे-

और आखिरकार उसके पैर तल से उखड़ गए-
उसका मुंह, बुलबुले उगलती गुफा के अंदर जा घिरा-
और उसी पल नागराज ने सीवार को दबोच लिया-
अब मुझे इसको हिलने नहीं देना है!
वरना यह मौका दुबारा नहीं मिलेगा!
कुछ पलों तक छटपटाने के बाद सीवार का शरीर शांत पड़ गया-
और स्वच्छ हवा के बुलबुलों ने नागराज एवं तिलिस्माचार्य के फेफड़ों में सांस फिर से लौटा दी-
यह चमत्कार कैसे हुआ, नागराज? सीवार खत्म कैसे हो गया?

मैं सीवार की कमजोरी ढूंढ रहा था, और पानी में रहने वाले हर जीव की एक ही कमजोरी होती है! हवा! हम पानी में सांस नहीं ले सकते, और जलचर हवा में सांस नहीं ले सकते!

यह ख्याल आते ही मैंने सीवार का मुंह इस गुफा में घुसा दिया, जो हवा के बुलबुलों से भरी हुई थी! और सांस न ले पाने के कारण, सीवार खत्म हो गया!

अगला चरण पर्वत या कहिए थल था! थल के बाद समुद्र आता है, और समुद्र के बाद पृथ्वी का केन्द्र ही आएगा, जो आग से भरा होता है। हवा से नहीं!

तुम्हारा कहना ठीक है नागराज! लेकिन आग की गुफा के पार हम जाएंगे कैसे?

सीवार के पत्तों को लपेटकर!

यह आग इन पत्तों को नुकसान नहीं पहुंचाती है!

टटोल-टटोलकर आगे बढ़ते नागराज और तिलिस्माचार्य जल्दी ही गुफा के अंत तक आ पहुंचे-
आगे खौलावे से भरा हुआ कुंड है नागराज! खड़े हो सकने की एकमात्र जगह यही है! और यहां पर भी ज्यादा देर खड़े रहे तो हम तीव्र गर्मी से मर जाएंगे!
हमको उस बीच वाली चेन तक पहुंचना है, जो एक ढक्कन से जुड़ी हुई है। वही हमको तिलिस्म के पार ले जाएगी! मैं दीवार से चिपककर वहां तक पहुंच सकता हूं, और आप 'गरूड़दंड' से उड़कर!

लेकिन दोनों को जल्दी ही ये विचार त्याग देना पड़ा-
ओह! लावा-कुंड से सर्पाकार आकृतियां निकल-कर हम पर हमला कर रहीं हैं!
हमको नीचे उतरना पड़ेगा!
लेकिन ये तो नीचे उतरने पर भी हमारा पीछा नहीं छोड़ रहीं हैं! अगर इन्होंने हमको लपेट लिया तो हम भस्म हो जाएंगे!
आऽऽऽह!
नागराज! क्या हुआ?
मैं ठीक हूं, तिलिस्माचार्य, लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि इनका सिर्फ धड़ गर्म है! सिर एकदम ठंडा है!...
... शायद यही चेन तक पहुंचने का रास्ता है!
57

कैसा रास्ता नागराज?
इन 'अग्नि-प्राणियों' के ठंडे सिरों को पकड़कर लटक जाइए। और ये हवा में लहराते हुए जैसे ही बीच वाली चेन तक पहुंचे, वैसे ही चेन को पकड़ लीजिए!
ऐसे हम इन अग्नि-प्राणियों से भी बचे रहेंगे! क्योंकि ये एक-दूसरे के करीब नहीं आ रहे हैं!
मैं अपने दंड को इस अग्निप्राणी के सिर पर अटका कर, लटक जाता हूं!
नागराज!
ओह! तिलिस्माचार्य का दंड फिसल गया है!
नागराज का हाथ चेन पर कसते ही ढक्कन ऊपर की तरफ खिंचने लगा-
और साथ-साथ नागराज और तिलिस्माचार्य भी ऊपर जाने लगे-
और कुछ पलों के बाद-
वाह! हम तिलिस्म के केन्द्र में आ गए हैं!

तालिस्मान को आशंका थी कि उसकी कोशिशों के बावजूद तू तिलिस्म को तोड़ ही लेगा। इसीलिए मैं तालिस्मान का दुश्मन बनकर तेरा दोस्त बन गया, और तेरे साथ-साथ यहां तक आ गया!

खत्म तो तुझे तिलिस्म में ही कर देना चाहिए था! पर क्या करता? हर जगह खुद मेरी जान भी खतरे में फंसी थी! पर अब सिर्फ तेरी जान जाएगी!

अग्रज के स्थान पर हम तेरी लाश रखेंगे नागराज!

क्रमशः